राम कहो मैं क्या

राम कहो मैं क्या करूँ,
मुझे रूठा राम मनाना है।

तुम से ही बल माँगू पिया,
मैंने तुमको ही तो पाना है।।

हर पल तेरा नाम मैं लूँ,
तेरी ही अब हो जाऊँ।

राम सामर्थ दो आकर मुझको,
तुझमें ही अब खो जाऊँ।।

प्रत्यक्ष देख रही हूँ राम,
स्वतः ही सब कुछ होता है।

फिर भी कहो यह मूर्ख मनवा,
क्यों हँसता क्यों रोता है।।

दूर से क्यों न देख लूँ,
सब तू ही करे सब तेरा है।

क्यों न अब यह जान लूँ,
कर्मन् में आदेश भी तेरा है।।

रखवाले इस नैया के राम,
खेवैया भी तो तुम ही हो।

कर जोड़े तुझे कहती हूँ,
इक बेरी अब तुम दर्शन दो।।

प्रार्थना शास्त्र नं. २
प्रार्थना नं. ३६३ (२४.४.१९६०)

अनुक्रमणिका

३ **'कृतज्ञता के सुमन... उस प्यार के श्री चरणों में...'**
श्रीमती पम्मी महता

९ **अखिल रचयिता जब रचे, भण्डार सब के तू भर दे**
अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

१३ **भाव के भूखे भगवान**
स्वर्गीय डॉ. जे के महता

१७ **अनेक यज्ञ कहें वेदन् में... किये, जो चाहे पा जाओ**
'मुण्डकोपनिषद्' में से

२१ **'कर्मों से त्याग रूप संन्यास की अपेक्षा कर्मों का योग श्रेष्ठ है।'**
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता - भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' में से

२७ **सत् से प्रेम कैसे हो**
पिता जी के प्रश्नोत्तर

३३ **भक्ति की पुकार - इक बूँद के प्यासे हैं हम!**
श्रीमती पम्मी महता

३६ **अर्पणा समाचार पत्र**

❖ ❖ ❖

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनीबद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा-प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा जून २०१७ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

‘कृतज्ञता के सुमन... उस प्यार के श्री चरणों में, जिसने आज तुम्हें ‘जगत चाची’ बना दिया!’

प्रस्तुत लेख, श्रीमती पम्मी महता ने परम पूज्य माँ के लिए पतिया रूप में आज से लगभग २५ वर्ष पूर्व लिखा था। पूज्य माँ उन्हें अक्सर कहा करते थे कि सिर्फ़ कुछेक बच्चों की ‘चाची’ न बनकर तुम सबकी ‘चाची’ बनो और सहज में ही उन्हें ‘जगत चाची’ की उपाधि दे दी! जिससे वह एक परिवार के लिए ही नहीं, बल्कि उनके सम्पर्क में आने वाले सभी की ओर प्रेमपूर्वक दृष्टि रखते हुए वैसा ही व्यवहार करें।

(जिसे वह आज तलक बख़ूबी निभा रही हैं।)

डॉ. जे के महता (बाबा सर) श्रीमती सत्या महता, श्रीमती पम्मी महता एवं उनके पति डॉ. रमेश महता

देखिये न, आज मेरे हाथ में पतिया रूप में बाबा सर (Baba Sir - परम पूज्य माँ, डॉ. जे के महता को इस प्रकार सम्बोधित किया करते थे) की कुछ पंक्तियाँ मुझे मेरे जन्मदिन पर लिखी मिलीं। असीम कृतज्ञता से आप सभी के साथ बाँट रही हूँ क्योंकि परम पूज्य श्री हरि माँ का बाबा सर को यह अनुग्रह भी है और आशीर्वाद भी है मुझे। अपने बड़ों के आशीर्वाद बड़े ही अनमोल होते हैं क्योंकि उनके सच्चे व सुच्चे हृदय से निकलते हैं!

प्रिय पम्मी,

आज तुम्हारे जन्मदिवस पर कृतज्ञता के सुमन चढ़ाने को जी चाहता है प्रभु चरणन् में...

...पहले तो भगवान के श्री चरणों में, जिन्होंने तुम्हें हमें दिया!

...दूसरा माँ के श्री चरणों में, जिन्होंने हमारे जीवन में पावनता भरी!

...और उस प्यार के श्री चरणों में, जिसने आज तुम्हें 'जगत चाची' बना दिया!

...अब तो बहुत बरस जीना ही पड़ेगा।

भगवान जी हमारे इस भाव और ज़रूरत को स्वीकार करें!

आपके पापा जी (२०/१२/१९९०)

इसी के साथ ही भाभी जी (बीजी) की भी कुछ इसी विध लिखी पंक्तियाँ भी मिलीं वह भी मेरे जन्मदिन की ही मिलीं। महज इतफ़ाक ही है यह -

Dearest Pammi

Wish you a very happy birthday and many many happy returns of the day. May you ever go on giving happiness to all those around you as you do now!

with love,

yours Satya

इन दोनों का मिला आशीर्वाद माँ की असीम कृपा का ही प्रसाद है, जिन्होंने हम सभी को प्रेम-सूत्र में पिरो कर आप माँ के श्री हरि चरणन् में धरा हुआ है। कैसे कैसे जीवन के हर रंग में, एक ही रंग, जिसे प्रेम रंग कहते हैं चढ़ गया या कहूँ प्रेममय जीवन हो गया... तो फिर प्रेम के सिवा वहाँ कुछ और रह जाता है क्या?

भगवद् प्रेम में खो कर ही स्वयं को, यानि अपने ही अस्तित्व को व अपने नाम को भी मिटा पाने का आप प्रभु माँ से, परम सौभाग्य मिल गया।

"हे श्री हरि माँ प्रभु जी, आप ही बताइये -

कब ऐसी प्रीत सच ही इस हृदय में आप जगायेंगे, जहाँ अपना आप यूँ ही मिट जाता है।

कब इस जीवन में पाये बड़ों के आशीर्वाद, आपकी कृपा से सार्थक हो पायेंगे मेरे जीवन में!

कब ऐसी प्रीत इसके हृदय में जगाओगे जहाँ अपना आप मिट ही जाता है व आप ही आप आंतर बाहर नज़री आने लगते हैं।

यह तो आप श्री हरि माँ की प्रीत में पता चल ही गया है कि आपकी करुण-कृपा में कुछ भी तो नामुमकिन नहीं। जहाँ जब भी आपकी निगाह पड़ती है, वहाँ सभी पावन हो जाता है। आप की प्रीत सभी के लिये निरन्तर बरस रही है। तभी तो सभी को अपनी ओर खेंच लेती है। अजब दास्तां है यह, जितना इसका चिन्तन-मनन करो, यह निरन्तर आपके हृदय को अपनी ओर खेंचती भी है और हृदय को स्वच्छ व सुन्दर कर लेती है। पल-पल यही तो देखा है जीवन आपके की सरस-सुधा में!

सच माँ, आपका सगुण वेष में उतरना जीव जगत के लिए कितना महत्वपूर्ण है क्योंकि इस सगुण वेष में ही आप का निराकार स्वरूप छिपा है। आपका यह सगुण वेष देख कर व उससे प्रेरित हो कर ही धन्य धन्य हो जाता है यह मन, व आपके असीम अनुग्रह से ही आपकी ओर आने को प्रेरित हो उठता है।

वह विनम्रता, वह धड़कन, जो आपकी प्रीत में है, वो सभी के लिए धड़कना सिखा देती है। अपने पराये का भेद मिटा देती है। 'सभी आपके हैं,' इसीलिए तो हम सभी एक हैं!

सच माँ! जब आपकी निगाह से देखें और आप ही के सभी हैं, यह जान व मान कर देखें, तो कोई पराया है ही कहाँ...? सभी आपके हो कर ही तो हम सभी एक दूसरे के लिए हैं! कहाँ है कोई पराया! हे श्री हरि नाथ, हम सभी को इस परम सत्य में ले चलिए जो आंतर की मल धुल जाये और पूर्ण पावनता के अद्‌भुत व विलक्षण दर्शनों से नवाज़ लिये जायें!

हे श्री हरि नाथ, हमें यूँ ही अपने से सनाथ कर लीजिये जो हम सब एक रंग हो जायें... राम रंगी हो जायें। आप ही की रज़ा में रज़ामंद हो कर रह पायें तो जीवन सार्थक हो जाये! आमीन।

सच पूछिये तो हम जीवों के पास तो कोई मान ही नहीं, जिससे आपका सम्मान कर पायें। हे ईश, आप ही की कृपा से आपके जीवन के सच्चे व सुच्चे दर्शन पाकर चित्रवत् जीव ठगा सा, आपको चकित हुआ देखता ही चला जाता है - कितनी पावन प्रीत है आपकी! कितनी मुकम्मल, निश्छल व निष्कपट प्रीत है आपकी! सच ही, अपने आप में पूर्णतया मुकम्मल!!

धन्य धन्य हो रहे हैं आपकी जीवनियाँ का यह अद्‌भुत व विशाल मंजर देख कर... क्यों न कहूँ कि पावन प्रेम का परम पुनीत स्रोत है आप! आप ही की चरण-रज में लोटने को मन करता है। जीवन को कोमल व अति सुन्दर भावनायें देकर प्रसाद रूप में आप ही तो जीव जगत को नवाज़ते हैं। अपनी सान्निध्यता प्रदान करते करते इन कठोर हृदयों को कैसे कोमल व प्यारी भावनाओं से भरते जाते हैं।

कैसा अद्‌भुत, विलक्षण तथा दिव्य दर्शन दे नवाज़ते हैं हमें, जो हम आंतर में पड़ी कालिमा से निजात पा जायें... आपके जीवन दर्शनों से लालायित हुआ मन, कैसे आप ही की प्रेम नमी में व आपकी प्रीत भरी आग़ोश में आकर, आप ही से सीख कर आप ही के श्री चरणन् में आ पाते हैं। ऐसे दिव्य जीवन को पाकर सच ही धन्य धन्य हो रहे हैं हम सभी!

जीव के पास कोई कासा नहीं, कोई पात्रता नहीं, कोई प्रीत नहीं, बस है तो ऊसरता ही ऊसरता से भरा मन... अहम् की परतों का शिकार... अपने ही 'मैं' के व्यूहचक्र में फँसा हुआ! अपनी ही अज्ञानता को ओढ़े हुये किस क़दर दरिद्र व भिखारी है। मगर कृतज्ञ हूँ आपके प्यार की एक दस्तक, आपके स्पर्श का एक आश्वासन, आपके प्रेम सागर के लिए... जो आपकी अखियों में उतर कर जब बहता है तो जानो उसी बहाव में बहा कर ले जाता है सदा के लिए!

आप सगुण वेष में बार बार जीव जगत के लिए धरती पर उतर कर न आयें तो यह अनुपम व अनूठे आपके दिव्य प्रसाद को भला कैसे पा सकता है... यह तो हे श्री हरि माँ, आप ही की देन है जो हम आपसे पाकर आप ही की महिमा का सामगान हृदय से गा पाते हैं।

जिसे आपका नाम रूपा प्रसाद मिल गया आप ही से, वह जीव गौरवान्वित हो जाता है क्योंकि उसे आप ही आपके श्री चरणन् में स्थान मिल जाता है और आपकी चरण चाकरी का प्रसाद भी मिल जाता है। यूँ ही तो अपने श्री चरणन् में बिठा कर इसके अहम् को गलित कर लेते हैं। इसके आंतर की ऊसरता मिटने लगती है और प्रीत की पंखुड़ियाँ श्वास लेने लगती हैं। आप श्री हरि माँ की समतल भूमि पर उतार ली जाती है। हे माँ, आप अपनी परिपूर्णता के कैसे अपनी लीला राही दर्शन देते हैं।

हे श्री हरि परम वन्दनीय माँ,

... ज्ञान आपका, ... प्रीत आपकी,

... राह आपकी, ... राही भी स्वयं आप,

... और लक्ष्य भी आप!

सच जानिये, यह सभी आपके सगुण रूप में ही मिला है। ईश्वर करे आपकी इस परम पुनीत देन के लिए व आपके इस असीम अनुग्रह के लिए पल-पल यह हृदय आपका धन्यवाद ही करता चला जाये। निरन्तर ही असीम श्रद्धा व भक्ति भाव से आपकी चरण-रज सीस चढ़ाते हुये यही तहेदिल से दुआ करती हूँ कि आपकी यह देन जो इस क़दर दिव्य है; इसकी पावनता सदा इस हृदय में उसी तरह सुरक्षित रहे, जिस क़दर आपने इसे नवाज़ते हुये अपने समेत अपना सर्वस्व दे दिया है। सच माँ, धन्य-धन्य हो गई हूँ व यही प्रार्थना आप से करती हूँ कि आपके पावन बहाव में बहते हुये यह मन शुचि पावन हो जाये।

हे भारत भूमि, तू धन्य है! युगों युगों में तू अपने आँचल में जगतपति को कितने वेश में हम मानस की जात के लिए, इसके उत्थान के लिए व इसके उद्धार के लिये हम पर करुण-कृपा करी, हम गुमराहों को राह पर लाने के लिए अवसर प्रदान करती है व हमें गौरवान्वित करती है!

हम इस परम सत्य को धारण करते हुये आपका व श्री हरि माँ प्रभु का कोटि-कोटि धन्यवाद करते हैं... और तहेदिल से दुआ करते हैं, 'हे श्री हरि नाथ, हमें अपने में ही सनाथ किये रहियेगा जो इस कलियुग से निजात पाये करी सतयुग में प्रवेश कर पायें... क्योंकि कलियुग का प्रभाव तो देख ही नहीं लिया बल्कि इस युग में जी कर पता चला है कि हम क्या थे और कैसे हो गये..!

कृतज्ञ हैं माँ आपके, जो आपने अपनी करुण-कृपा का अनूठा व दिव्य प्रसाद देकर आंतर की मलिनता व उसकी सभी कुण्ठाओं के दर्शन देई देई करी हमें इस दलदल से उबरने के लिये आपने मार्गदर्शन ही नहीं किया, हमें तो चल चल कर ही बताया है... "देख लो, कहाँ से कहाँ पहुँच कर अपना पूरा अस्तित्व ही ख़त्म कर लिया है आप सभी ने..!"

सच माँ, भाग्यशाली हैं हम जिन्हें अपने में विराम देकर हमारी ज़िन्दगी की मुहार ही मोड़ दी है आपने। कैसे धन्यवाद करें आपका..? कैसे पूर्णतया समर्पित हो कर व कोटि-कोटि प्रणाम देकर, आपके दिये इस सत् पथ को ही ग्रहण करते हुये सदा-सदा के लिए आप ही में विराम पा जायें! आमीन।

हे श्री हरि जगद्जननी माँ, यही असीस दीजिये कि आपकी इन अद्भुत लीलाओं के दिव्य दर्शनों का आपने जो हमें अवसर दिया है, इसे मन, वचन, काया से पूर्णतया ग्रहण करते हुये जीयें। आंतर-बाहर आप ही आप नज़री आयें व आप ही के क़दमों का सदक़ा उतारते हुये उन्हें ही पूर्णतया सच्चे व सुच्चे हृदय से ग्रहण कर पायें।

साधना दिवस की याद आते ही यह भाव उठी आये हृदय में! इन्हें आपसे पाया है व आप ही के श्री हरि चरणन् में समर्पित करते हुये यही इल्तिजा करती हूँ आपसे कि अपनी ही देन को इस हृदय में इस क़दर बसा लीजियेगा कि आपकी आराधना, मेरे जीवन की साधना सदा-सदा के लिए बन कर, मुझे आप ही आप में स्थिर कर दे।

यही अरदास है मेरी! यही अनुनय-विनय भी कि आपकी हर देन को सच्चे व सुच्चे मन से, असीम अदब, प्यार से तथा श्रद्धा भक्ति भाव से ग्रहण कर पाऊँ व धारण कर पाऊँ!

असीम प्रेम से,

आप ही की पम्मी

९ मार्च १९९१

❖ ❖ ❖

अखिल रचयिता जब रचे,
भण्डार सब के तू भर दे

गतांक से आगे–

पौड़ी ३१

आसणु लोई लोई भण्डार।
जो किछु पाइआ सु एका वार।
करि करि वेखै सिरजणहारु।
नानक सचे की साची कार।
आदेसु तिसै आदेसु।
आदि अनीलु अनादि अनाहति,
जुगु जुगु एको वेसु।।३१।।

शब्दार्थ : उसका निवास तथा भण्डार प्रत्येक लोक में है। उन लोकों में जो कुछ है, वह उसने एक बार (ही रच) डाला है। सृजनहार रच रच कर (उस रचना को) देखता है। हे नानक! उस सच्चे की

रचना भी सच्ची है। उसको नमस्कार है, उसको नमस्कार है, जो (सृष्टि का) आदि है, रंग, रूप रहित है, आदि रहित तथा नाश रहित है और युगों युगों में एक रूप है।

पूज्य माँ :

आसन तेरे भण्डार के, जन्म जन्म अखण्ड रहें।
हर ही लोक में आसन तेरे, मालिक मेरे लग रहे।।१।।

एको बार तू सब रचे, एको बार तू सबको दे।
अखिल रचयिता जब रचे, भण्डार सब में तू भर दे।।२।।

आप बनाए देखे आप, आप रचयिता सिरजन हार।
कोई सच्चा सत्वासी जाने, जाने मेरे नानक तेरा कुमाल।।३।।

कोई सत् में रहे सत् वास करे, तब ही सत् को जान सके।
सत् जाने सत् हृदय बसे, तब ही सत्मय कर्म करे।।४।।

कहे नानक सुन रे मना, सच्चा ही साँचो कर्म करे।
साँचो जाने 'मैं' कहाँ रहे, बाक़ी केवल नानक ही रहे।।५।।

नित्य आदेश वा सीस धरूँ, नित्य उसी को नमन करूँ।
आदि अनादि पावन अखण्ड, इक ओंकार को देखा करूँ।।६।।

मैं तुझको क्या कहूँ, मेरे मालिक बादशाह।
ख़ुदावन्द दिले आगाह मेरे, दिव्य दृष्टि देता जा।।७।।

नूरानी पुरनूर सतीत्व तेरा, उसका दर्शन हो।
तब ही तो यह हो सके, गर चरण का स्पर्शन् हो।।८।।

तेरे चरण ही सत् हैं मालिक मेरे, चरण मिलन अब हो।
अपने चरण ओ नानक मेरे, मेरे हृदय में धरो।।९।।

तू दरियादिल करुणापूर्ण, तुम तो एतबार करो।
पहली बेरी जब रचो, तुम तो सब कुछ दे दो।।१०।।

भण्डार सबका भर भर के, तुम आप तो मौन रहो।
मुझ जैसे को जब मिले, वह गुमानपूर्ण तब हो।।११।।

इतना गुमान अभिमान, अब इस दिल में भरा।
गुमान चूर्ण अब तब ही हो, गर दरस मिले तेरा।।१२।।

विशाल हृदय तू पतित पावन, पतित उद्धारक तुम हो।
मैं ग़ाफ़िल तेरे नाम से, नाम हृदय में भरो।।१३।।

रहमत तेरी हो जाये, तेरी अनुकम्पा मिल जाये।
गर चरण में तेरे सीस झुके, मैं जानूँ क्षमा भी हो जाये।।१४।।

पर कैसी मूर्ख मूढ़मति, जान के चरण में न आये।
हुकम अदूली नित्य करे, तेरी नाफ़रमानी किये जाये।।१५।।

मुझ मूर्ख को नानका, अब अपने चरण में लो।
भक्त वत्सल दरियादिल, तुम ग़रीब परवर हो।।१६।।

मैं ग़रीब तू ग़रीबनवाज़, मैं ख़ाक तू परवरदिगार।
मैं अपावन तू पावनकर, मैं मूर्ख तू करे अपना इज़हार।।१७।।

बार बार तोरे चरण पड़ी के, नाहक करूँ मैं तोरी पुकार।
मानूँ मूढ़ा मैं कुटिल कपटी, पर फिर भी करियो मोरा उद्धार।।१८।।

तूने मुझको न छोड़ा, मैंने नाता तर्क़ ही कर डाला।
तूने तो सब कुछ दिया, मैंने तुझको दूर ही कर डाला।।१९।।

आज चरण में पड़ी कहूँ, बस एक तुम ही तो हो।
नानक मेरा आसरा तू, पर ओंकार तुम हो।।२०।।

अखण्ड दिव्य प्रकाश रूप, मेरे बादशाह तुम हो।
तुम कहो तुम सब को दो, और इक बेरी ही दो।।२१।।

मैं जानूँ दे के वापिस न लो, जो मुझे दिया पर लो।
अब नाम की भिक्षा माँगूँ मैं, मुझे प्रेम की लागे लौ।।२२।।

ओ नानक दर पे आई तेरे, अब तो शरण में लो।
अब तो शरण में लो ,..... ।२३।।

मोपे भक्ति नहीं इबादत नहीं, ग़रज़ लेई के आई हूँ।
संग मोह वहशत से पूर्ण, मन लेई के आई हूँ।।२४।।

अपावनता अपनी देखी, अज नानक बहुत घबराई हूँ।
तू मेहरबान तू पावनकर है, तेरी महिमा सुन कर आई हूँ।।२५।।

ओ आक़ा मेरे ख़ुदावन्द तू, मैं ग़रज़ ही लेके आई हूँ।
मैं हूँ ही नहीं मेरी जा तू रहे, यह अर्ज़ मैं ले के आई हूँ।।२६।।

नाम न जानूँ मैं ज्ञान न जानूँ, न ध्यान भी जानूँ पर आई हूँ।
तुमको न मानूँ मैं सत्य न जानूँ, बेगानी बन के आई हूँ।।२७।।

मैं तो तुझे ठुकराई हूँ, पर फिर भी दर पे आई हूँ।
तू न छोड़े दिल न तोड़े, मुख मोड़े न सुन के आई हूँ।।२८।।

परवरदिगार तू दयापुंज, नाम यह सुन के आई हूँ।
क्षमा स्वरूप तू दयालु आप, मैं तेरी शरणा आई हूँ।।२९।।

मैं पात्र नहीं यह जान करी, कुपात्र ही दर पे आई हूँ।
कुछ फ़ज़ल ही कर मेरे मेहरबान, तेरा नाम मैं सुन के आई हूँ।।३०।।

नानक नानक मेरे मालिका, अखण्ड नाम सुनी आई हूँ।
पूर्ण जो है तू ही है, मैं तुमसे सुन के आई हूँ।।३१।।

यह मत कहना तूने दे ही दिया, जो दे ही दिया पुनि नहीं लिया।
यह मत कहना मैं नहीं तेरा, मैं ने ख़ुद छोड़ा और दूर रहा।।३२।।

यह मत कहना मैं बहु बुरा, तूने मुखड़ा मोड़ लिया।
यह मत कहना मैं दुर्गुणिया, और तूने साथ ही छोड़ दिया।।३३।।

मेरे नानक द्वार न बन्द करो, मत कहना हाथ यह मोड़ लिया।
तेरे प्रेम की याचक बनी आई, मेरे नानक अब तू कर दे दया।।३४।।

या थोड़ा सा जो प्यार उठा, दीदार का कुछ कुछ दर्द उठा।
दर्द ही इतना बढ़ा तू दे, उसपे नमक भी छिड़का जा।।३५।।

ओ नानका! मेरे बादशाह.

क्रमशः

❖ ❖ ❖

भाव के भूखे भगवान

स्वर्गीय डॉ. जे के महता (पापा जी) द्वारा
लिखित प्रस्तुत लेख 'मार्च १९८६' के अंक में से लिया गया है।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।

श्रीमद्भगवद्गीता ९/२६

भगवान कहते हैं : 'पत्र, पुष्प, फल, जल इत्यादि जो कोई भक्त मेरे लिये प्रेम से अर्पण करता है उस शुद्ध-बुद्धि, निष्काम प्रेमी भक्त का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र पुष्पादिक मैं सगुण रूप से प्रकट होकर प्रीति सहित खाता हूँ।'

स्थूल में पूजा की चाहे जो भी विधि हो, भगवान तो भाव के भूखे होते हैं। छत्तीस प्रकार के व्यंजनों से चाहे उन्हें भोग लगाओ, सोने-चाँदी से उन्हें आभूषित करो परन्तु भगवान इनसे नहीं, भक्त के हृदय में स्थित, भाव से रीझते हैं। भक्त कण्णप की कथा इसी का प्रमाण है।

कण्णप दक्षिण भारत के किसी जंगली प्रदेश में रहने वाली एक शिकारी जाति के सरदार का बेटा था। तीरों की नोक में ज़हर लगा कर शिकार करना ही उसका एकमात्र जीवन का काज-कर्म था। सोलह वर्ष की आयु में ही कण्णप धनुष-बाण, भाला इत्यादि अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण हो गया था।

पहली बार दो नौकरों के साथ उसके पिता ने उसे शिकार के लिये भेजा। कुछ जानवरों को मारने के पश्चात् उसने सुअर का शिकार किया। भूख बहुत लग रही थी। कहीं पानी मिले तो वहीं बैठ कर, माँस पका कर भूख-प्यास मिटाने के लिये, वह किसी जलाशय की तलाश करते करते एक पहाड़ी पर पहुँचा। उसके शिखर पर भगवान शिव के मन्दिर को देख कर कण्णप के हृदय में भक्ति की एक हिलोर उठी। वह भूख-प्यास को भूल कर आनन्द-विभोर हो भगवान शिव को मिलने के लिये शीघ्रातिशीघ्र क़दम उठाने लगा।

मन्दिर में पहुँचते ही भावुक हृदय भक्त ने लपक कर देव प्रतिमा को प्रेम आलिंगन में बाँध लिया। उसके आनन्द का पारावार न रहा। 'भगवान, तुम अकेले ही इस भयानक वन में जंगली जानवरों के बीच में रहते हो!' यह सोच कर उसके आँसू बहने लगे। भगवान के सिर पर कुछ हरे पत्ते, फूल और जल देख कर वह दु:खी हो गया। 'किसने मेरे भगवान के सिर पर यह चीजें रखी हैं?' वह तड़प गया।

उनका नौकर यहाँ कई बार कण्णप के पिता के साथ आया था। उसने एक ब्राह्मण को इन फूल-पत्तों के द्वारा पूजा करते देखा था। उसने कण्णप को बताया, कैसे पुजारी पहले जल चढ़ाता है, फिर फूल-पत्ते इत्यादि सीस पर धर कर भगवान को भोग लगाता है और मुँह में कुछ बुदबुदाता है। कण्णप के हृदय में पूजा करने की तीव्र जिज्ञासा उत्पन्न हुई। 'मैं भी भूखे भगवान को सुअर का माँस खिलाऊँगा।' परन्तु भगवान को छोड़ कर जाने को उसका जी नहीं चाहता था। कहने लगा 'हे मेरे मालिक! तुझे अकेला छोड़ कर जाने को जी नहीं चाहता, परन्तु तुझे भूख लगी है, मैं जाकर तेरे लिये अपने हाथों से पका कर माँस लाता हूँ।' यह कहता हुआ वह पहाड़ी से नीचे उतरा, जहाँ उसके नौकर उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

कण्णप ने बड़े प्रेम से माँस को पकाया। चख कर देखा कि ठीक-ठाक पक गया है। यह देख कर, एक बड़े पत्ते में उसे लपेट कर मन्दिर की ओर चला। उसकी ऐसी उन्मत्त दशा देख कर नौकर घबरा गये। 'यह तो पागल हो गया है, माँस को चख-चख कर रखता जाता है, न इसे अपनी भूख-प्यास की याद है और न ही हमारी परवाह। इस का तो सिर फिर गया है।'

भयभीत हुए अपने मालिक को ख़बर देने के लिये, वह कण्णप को वहीं छोड़ कर भाग गये। भक्ति भाव में तल्लीन कण्णप ने न तो उनकी बात ही सुनी और न ही उन्हें जाते देखा। वह एक हाथ में माँस तथा दूसरे में तीर-कमान लेकर मन्दिर की ओर चला। पूजा के लिये फूल और जल भी चाहिए, यह ध्यान आते ही उसने कुछ फूल तोड़ कर अपने बालों में खोंस लिये और जल नदी से लेकर अपने मुँह में भर लिया।

मन्दिर में पहुँचते ही जूतों समेत वह भाग कर भगवान की प्रतिमा के पास पहुँचा। देवता के सिर पर से पुराने फूल उसने बड़े प्रेम से अपने पैरों से हटाये क्योंकि उसके हाथ खाली नहीं थे। अभिषेक के लिये मुँह में भरे पानी का कुल्ला कर दिया और सामने माँस रख कर खाने के लिये आग्रह करने लगा। अँधेरा हो गया था। ऐसी अँधेरी रात में जंगली जानवरों से अपने भगवान की रक्षा करने के भाव से धनुष-बाण लेकर वह वहीं पहरा देने लगा। पौ फटते ही अपने देवता के लिये ताज़ा माँस लाने वह जंगल की ओर चला गया।

प्रातःकाल जब ब्राह्मण पुजारी पूजा करने आया तो मन्दिर में हड्डियाँ, माँस इत्यादि बिखरा देख वह बहुत घबरा गया और विलाप करने लगा, 'यह किस जंगली शिकारी ने मेरे भगवान के मन्दिर को भ्रष्ट कर दिया है।' लाचार होकर बड़ी कठिनता से चल-चल कर, ताकि माँस कहीं पाँव को न छू ले, उसने मन्दिर को झाड़-बुहार कर साफ किया। फिर नदी में स्नान करके आया और मन्दिर को शुद्ध करके अश्रुपूर्ण नेत्रों से भगवान को दंडवत प्रणाम किया। वेदों की ऋचायें बोल-बोल कर स्तुति की। पूजा को समाप्त कर वह अपने घर लौट गया।

उधर कण्णप ने कई जानवर मारे, मधु इकट्ठा किया, माँस पहले की तरह पकाया। एक हाथ में माँस व मधु दूसरे में धनुष-बाण, मुँह में जल और बालों में फूल भर कर मन्दिर की ओर दौड़ा। पहले की तरह आज भी वैसे ही पाँव से भगवान के सिर पर धरे फूलों को हटा, मुँह में भरे जल के कुल्ले से उन्हें स्नान कराया और माँस सामने धर कर कहने लगा, 'आज स्वादिष्ट माँस लाया हूँ, साथ मधु भी है। आपको भूख लगी है न, 'लो खाओ!'

इस प्रकार पाँच दिन तक ऐसा होता रहा। पुजारी रोज़ की मन्दिर की यह दशा देख कर घबरा कर आर्त हो भगवान से प्रार्थना करता, 'प्रभु! मेरे पाप क्षमा करो, यह भ्रष्टाचार रोको!' एक दिन स्वप्न में भगवान प्रकट हुए और पुजारी से बोले, 'तुम मेरे प्रिय शिकारी भक्त को बिलकुल नहीं जानते! वह जो कुछ करता है, मुझे प्रसन्न करने के लिये करता है। मेरे सिवा वह और कुछ भी तो नहीं जानता।'

'अपने जूते की नोक से जब वह मेरे सिर के फूल हटाता है तो मुझे उसका स्पर्श अति प्रिय लगता है। जब वह प्रेम-भक्ति में खोया मुझ पर कुल्ला करता है तो मुझे गंगाजल से भी अधिक पवित्र लगता है। बालों से निकाल कर जब वह फूल चढ़ाता है तो देवताओं के चढ़ाये हुए फूलों से भी अधिक प्रिय लगते हैं। भक्ति और प्रेम से भरपूर अपनी भाषा में जब प्रसाद पाने का आग्रह करता है तो उसके शब्द मुनियों के वेद के पाठ से कहीं अधिक मीठे लगते हैं। यदि उसकी भक्ति का महत्व देखना है तो कल रात मेरे पीछे खड़े होकर चोरी-चोरी देख लेना।'

रात भर पुजारी को नींद नहीं आई। अगले दिन मन्दिर पहुँच कर, उसे झाड़-पोंछ कर, पूजा करके प्रतिमा के पीछे छिप कर भक्त की प्रतीक्षा करने लगा। आज कुछ देर होने के कारण कण्णप का दिल धड़कने लगा। कहीं कोई अनिष्ट न हो जाये, वह भागने लगा। मन्दिर पहुँच कर वह स्तंभित रह गया।

भगवान की दाहिनी आँख से ख़ून की धारा बह रही थी। 'हाय! मेरे नाथ तुम्हें कितना कष्ट हो रहा है, मैं क्या करूँ?' वह यह दुःखद दृश्य सह नहीं सका, विलाप करता हुआ भूमि पर गिरा, फिर उठा और भगवान की आँख का ख़ून पोंछने लगा। ख़ून तो बन्द ही नहीं होता था। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। कभी भूमि पर लोटता और कभी धनुष-बाण ले उसकी तलाश में भागता, जिसने उसके भगवान को दुःखी किया है।

सहसा उसे स्मरण हो आया कुछ जड़ी-बूटियों का, जो घाव पर लगाते हैं। भागा-भागा गया और उनका एक गट्ठा उठा लाया। निचोड़-निचोड़ कर उसे आँख में डालने लगा। परन्तु ख़ून बन्द नहीं हुआ। उसे शिकारियों की एक कहावत याद आई, 'माँस का ज़ख़्म माँस से ही भरा जाता है।' यह विचार आते ही उसने बाण की तेज़ नोक से अपनी दाहिनी आँख निकाल दी। उसे निकाल कर भगवान की आँख पर रख कर धीरे से दबाने लगा। ख़ून बन्द हो गया।

वह आनन्द-विभोर हो नाच उठा और गाने लगा। मन्दिर उसकी हँसी की गुंजार से गूँज उठा। 'अरे! हाय! यह क्या हुआ?' अब भगवान की बाहिनी आँख से ख़ून बहने लगा?' कण्णप फिर विह्वल हो उठा, परन्तु जल्दी ही संभल गया। 'मेरी दूसरी आँख जो है', यह विचार आते ही उसने भगवान की दूसरी आँख पर पैर रख दिया ताकि उसे पता रहे कि आँख निकाल कर कहाँ रखनी है। फिर तीव्र गति से बाहिनी आँख के कोने में तीर की नोक लगाई। उसी क्षण भगवान जी ने प्रकट होकर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, 'ठहरो मेरे प्रिय कण्णप, तुम त्याग और प्रेम की मूर्ति हो! सदा ही इस प्रकार मेरे पास रहा करो।'

यह देख कर पुजारी को समझ आया कि भगवान स्वादिष्ट व्यंजनों से नहीं बल्कि भक्त के प्रेमपूर्ण भाव से रीझते हैं। भक्त के दर्शन के प्रसाद से वह भी आन्तर्मुखी हो गया। ❖

अनेक यज्ञ कहें वेदन् में...
किये, जो चाहे पा जाओ

गतांक से आगे –

तदेतत्सत्यं मन्त्रेषु कर्माणि कवयो यान्यपश्यंस्तानि त्रेतायां बहुधा संततानि।
तान्याचरथ नियतं सत्यकामा एष वः पन्थाः सुकृतस्य लोके।।

- मुण्डकोपनिषद्, प्रथम मुण्डक - द्वितीय खण्ड, १ श्लोक

शब्दार्थः

वह यह सत्य है कि बुद्धिमान् ऋषियों ने; जिन कर्मों को वेद मन्त्रों में देखा था; वे तीनों वेदों में बहुत प्रकार से व्याप्त हैं; हे सत्य को चाहने वाले मनुष्यो! तुम लोग उनका नियमपूर्वक अनुष्ठान करो; इस मनुष्य शरीर में तुम्हारे लिये यही शुभ कर्म की फल प्राप्ति का मार्ग है।

तत्व विस्तारः

द्वौ विद्या की कह आये, अपरा विद्या की कहते हैं।
इसके अनुयायी जन से, जग चाहें यह कहते हैं।।१।।

संसार कर्म का खेल है, वह यह खेलते रहते हैं।
चाहना संग में वेदन् के, मन्त्र मिलाते रहते हैं।।२।।

अनेक यज्ञ कहें वेदन् में, किये जो चाहे पा जाओ।
यज्ञ करो संग मन्त्र पढ़ो, मन्त्रफल तू पा जाओ।।३।।

किये महा कर्म महा यज्ञ, विधिवत् गर रे सब किये।
अनुकूल ही रे कर्मन् के, कर्ता को रे फल मिले।।४।।

अपरा विद्या में रुचि बढ़े, प्रथम मन्त्र रे कहते हैं।
फल वर्णन कह करी, फल की बात वह कहते हैं।।५।।

परा विद्या परम विद्या, उसकी नहीं रे कहते है।
अपरा विद्या की बतियाँ, जाने यहाँ पर कहते हैं।।६।।

अनेक कर्म विधान जो, ऋषिगण ने सत्य माने।
मन्त्र में कर्म देखे, सत्य कर्म जिनके माने।।७।।

त्रेतायुग में मन्त्र का, बहु विस्तार था हुआ।
या कहूँ वेदन् ने, उनका बहु विस्तार किया।।८।।

कर्मफल की गर चाहना है, नित्य उन्हें ही किया करो।
लोकों में फलदे है यही, यह शुभ कर्म किया करो।।९।।

ऋक् साम और यजुर्वेद, में विस्तार से कह चुके।
बहु मन्त्र बहु विधि, विधिवत् ही कह चुके।।१०।।

निश्चित फलदे वह है रे, ज्ञानी जन रे यह कह आये।
काज करी अनुभव सहित, कर्म गति की कह आये।।११।।

जन्म मरण तारक नहीं, कर्मफलदे यह सब हैं।
चाहना पूर्ति कारक यह, निश्चित जन्मदे यह सब हैं।।१२।।

आत्मतत्व न दर्शाये, माया में ही ले जाये।
मायिक मन मायिक चाहे, माया वृद्धि ही यह पाये।।१३।।

पर याद रहे क्षणिक हैं वह, भोग्य भोग के ख़त्म होयें।
अव्यय फल यह नहीं नहीं, नाशवान को जान ले।।१४।।

पूर्ण रूपेण जान ले, अपरा प्रथम वह कहते हैं।
कर्मगति प्रवाह फल, अपरा ही तो कहते हैं।।१५।।

जग में जाये रमण करें, स्वर्ग लोक भी पा जायें।
तृष्णा तृप्ति यूँ नाहिं हो, ज्ञानी सत्त्व चाहे जायें।।१६।।

वैराग्य उठे उसके मन में, त्याज्य जब इन्हें जान ले।
संग मिटे चाह मिटे, क्षण भंगुर जो जान ले।।१७।।

जिज्ञासा परम की उठ आये, मुमुक्षुवर्ती जग ध्याये।
सत्य पिपासा जाग उठे, अनित्य संग त्यज आये।।१८।।

इस लोक के वासी गर तुम हो, तन निवासी गर तुम हो।
यज्ञ कर्म वह कहते हैं, पूर्ण ही अब तुम करो।।१९।।

शुभ अशुभ रे कर्म करी, कर्मण का फल मिल जाये।
भोग रे उसका होने को, नव तन भी रे मिल जाये।।२०।।

निश्चित फल रे पाने को, संकल्प सत्य रे हो जाये।
वेदन् में बहु मन्त्र कहे, गाये सत्य ही हो जाये।।२१।।

विधि पूर्वक नियमबद्ध, अनुष्ठान रे किया करो।
यही पथ है रे अपरा का, जो चाहे पा लिया करो।।२२।।

प्रथम मन्त्र में यही कहा, यज्ञन् में जो है कहा।
अनुष्ठान जिसने किया, भावानुकूल रे पा गया।।२३।।

कर्मन् की गत न्यारी है, कर्मगति समझाते हैं।
वेदन् को रे ध्याय करी, अनुकूल फल पाते हैं।।२४।।

इच्छित फल निश्चित किये, धारणा हिय में धरे हुये।
निश्चित ही वह यज्ञ करें, चाहना मन में धरे हुये।।२५।।

भावानुकूल ही पायेगा, इच्छित फल रे पायेगा।
या कह लो यह यज्ञ तेरा, शुभ कर्म कहलायेगा।।२६।।

प्रथम रे वह अपरा की कहें, अपरा विद्या भी कही।
वेदन् मन्त्र में कहें, अपरा प्रकृति की ही कही।।२७।।

किस विध क्योंकर पाये उसे, विधिवत् राज़ तो कहते हैं।
कविजन ने तो कर्म कहे, उनका सार यह कहते हैं।।२८।।

अनेक विधि इन वेदन् में, अनेकों विधि हैं कह आये।
किस विध कौन रे फल मिले, विस्तार सों रे कह आये।।२९।।

यही कहें यहाँ जान ले, यही विधि शुभ फल मिले।
मन्त्रन् का अनुष्ठान जो है, निश्चित ही वह फल मिले।।३०।।

जीव लोक में उन्नत हो, गर यह चाहना तेरी हो।
भोगैश्वर्य स्थूल में, गर रे तुमको पाना हो।।३१।।

वेदन् में हैं मन्त्र कहें, उन्हें ध्याये तू पा जाये।
इच्छित चाहना तेरी जो, रूप रे धर कर आ जाये।।३२।।

२५-८-६१

क्रमशः

'कर्मों से त्याग रूप संन्यास की अपेक्षा कर्मों का योग श्रेष्ठ है।'

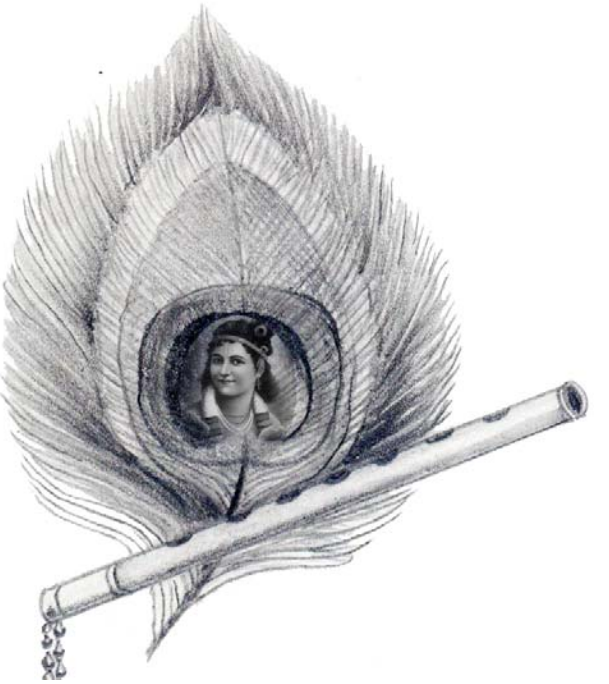

अर्जुन उवाच

संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि।
यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्।।

श्रीमद्भगवद्गीता ५/ १

अर्जुन भगवान पूछने लगे कि :

शब्दार्थ :

१. **हे कृष्ण! कभी कर्मों के संन्यास को,**
२. **और फिर कभी योग को सराहते हो,**
३. **इन दोनों में से एक, जो श्रेष्ठ है,**
४. **वह ठीक निश्चय से मेरे लिये कहिये।**

तत्व विस्तार :

देख नन्हीं!

१. अर्जुन परब्रह्म के यज्ञरूप स्वभाव को नहीं समझ सके।
२. योग और संन्यास में अभेदता को भी वह नहीं समझे।
३. योग और इसके सूक्ष्म राज़ को भी

वह नहीं समझे।

४. संन्यास स्वरूप ब्रह्म के यज्ञ को भी वह नहीं समझे।

५. स्वरूप और रूप में भेद होते हुए भी, दोनों में अभेदता का राज़ वह नहीं समझे। वह तो इतना ही समझे कि भगवान ने दोनों की प्रशंसा की है, दोनों को ही सराहा है, दोनों को ही श्रेष्ठ ठहराया है।

६. अर्जुन, ज्ञान और कर्मों के मिलाप का राज़ नहीं समझ सके।

७. आत्मा की बात वह समझ गये किन्तु आत्मा तथा कर्मों के संन्यास का वास्तविक राज़ नहीं समझ सके।

८. योग का स्वरूप तो वह समझ गये किन्तु योग का जीवन में रूप वह नहीं समझ सके।

९. संन्यास और योग को वह पृथक्-पृथक् मान गये। इस कारण, अब यहाँ भगवान से अर्जुन पूछने लगे, 'भगवान! आपने दोनों की प्रशंसा की है, परन्तु मैं किस पथ का अनुसरण करूँ? इन दोनों पथों में से जो कल्याणकारक है, उसे मेरे लिये कहिये, ताकि मैं वही करूँ।'

श्री भगवानुवाच

संन्यास कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते।।

श्रीमद्भगवद्गीता ५/ २

अर्जुन की बात सुनकर धैर्यवान भगवान बोले :

शब्दार्थ :

१. संन्यास और योग दोनों कल्याण ही करने वाले हैं,

२. परन्तु इन दोनों में कर्म संन्यास से कर्मयोग विशेष है।

तत्व विस्तार :

भगवान कहने लगे, 'संन्यास और योग, दोनों ही कल्याणकारक हैं।' नन्हीं! पहले अर्जुन की समस्या समझ ले!

जैसे साधारण लोग मानते हैं वैसे ही अर्जुन भी जग को छोड़कर, सब कर्तव्य छोड़कर, सब कर्म छोड़कर, किसी जगह एकान्त में बैठकर तत्व चिन्तन करने को संन्यास मानते थे।

भगवान ने संन्यास को इस मान्यता से अलग ही अर्थ दिया है, जिसे वह आगे जाकर स्पष्ट करते हैं।

भगवान ने कहा, 'अर्जुन! संन्यास श्रेष्ठ है और योग भी श्रेष्ठ है।' फिर, जैसे कि वह पहले भी कह आये हैं, वही

दोहराते हुए भगवान कहते हैं, 'पुरुष कर्मों के न करने से निष्कामता को नहीं पाता, न ही संन्यास मात्र से ही सिद्धि को प्राप्त करता है।' इस सिद्धान्त को सामने रखते हुए, भगवान पुनः कहते हैं, 'कर्मों से त्याग रूप संन्यास की अपेक्षा कर्मों का योग श्रेष्ठ है।'

नन्हीं! भगवान ने कहा, 'संन्यास श्रेष्ठ है, किन्तु कर्म का संन्यास ठीक नहीं।' इन दोनों का भेद समझ ले।

संन्यास :

नन्हीं! संन्यास :

१. कर्मों से आसक्ति के अभाव को कहते हैं।
२. तनत्व भाव के त्याग को कहते हैं।
३. राग और द्वेष के अभाव का परिणाम है।
४. देहात्म बुद्धि के अभाव का परिणाम है।
५. बाह्य कर्मों का त्याग कर देने से संन्यास नहीं मिलता। कर्म करते हुए, उनसे नितान्त निरासक्त हो जाना संन्यास है।
६. संन्यास कर्मों का त्याग नहीं। कर्मों राही किसी भी फल की चाहना न रखना और हानि-लाभ के प्रति निरपेक्ष और सम रहना संन्यास है।

नन्हीं! आगे चलकर भगवान स्वयं इसे स्पष्ट करते हैं। इसे अठारहवें अध्याय के दूसरे श्लोक में विस्तारपूर्वक कहेंगे।

जब भगवान ने कर्मयोग को श्रेष्ठ कहा, तब भी उन्होंने संन्यास की उपेक्षा नहीं की।

कर्म :

१. वास्तव में, कर्मयोग ही संन्यास दिलाकर आत्मा से योग सिद्धि करवा सकता है। कर्म त्याग से आत्मा से योग सिद्ध नहीं होता।
२. जीवन कर्म बहाव ही है, वह रोका नहीं जा सकता। यानि, कर्म तो करने ही पड़ेंगे।
३. फिर दैवी गुण भी कर्मों राही ही सिद्ध होते हैं।
४. हर साधक की साधना का प्रमाण तथा चिन्ह, कर्मों में ही निहित होता है।
५. ब्रह्म का स्वभाव जो अध्यात्म है, वह भी तो एक महान क्रिया रूप यज्ञ है; यह सम्पूर्ण सृष्टि उसी का ही तो प्रमाण है।

नन्हीं! जब साधक परम ज्ञान या उच्च ज्ञान को न समझे, तो सद्गुरु शनैः शनैः उसके स्तर पर उतरने लगते हैं। भगवान ने यह तो पहले कहा कि :

क) तू आत्मा है, इस तन की बातों से क्यों घबराता है?
ख) कर्मों से संग मूर्खता है।
ग) अपने आपको कर्ता मानना मूर्खता है।
घ) तू योग कर।
ङ) तुझे मैं वह बुद्धि देता हूँ, जिसे पाकर तू सांख्य ज्ञान से योग कर सकेगा।
च) फिर उस स्थिर बुद्धि के गुण कहे, जिन्हें पाकर जीव आत्मा से योग कर सकता है।
छ) उस स्थिर बुद्धि की शरण में जा, उस बुद्धि से तू पाप-पुण्य से तर जायेगा। फिर योग के चिन्ह बताते हुए कहा :
ज) योग से जीव कर्मों में कुशल हो जाता है और सुकृत् तथा दुष्कृत् दोनों से ऊपर उठ जाता है।
झ) मनो-उद्विग्नता, राग-द्वेष, भय, क्रोध छोड़ दो तो स्थिर बुद्धि हो जाओगे।
ञ) कामना और तनत्व भाव जब छूट

जायें तब जीव स्थिर बुद्धि हो जाता है।

ट) बाह्य कर्म बन्द करके मन में विषयों का स्मरण करना मिथ्याचार है। फिर यज्ञ करने की बातें समझाने लगे और कहने लगे :

ठ) जनक इत्यादि ने भी कर्म किये और सिद्धि पाई।

ड) फिर अपने ही जीवन की उपमा देकर कर्म राज़ समझाते रहे।

ढ) फिर कर्मों में अकर्म, तथा अकर्म में कर्म का राज़ भी सुझाया। नन्हीं! यह सब समझाते हुए, याद रहे वे अर्जुन को युद्ध के लिये प्रेरित कर रहे थे।

ण) फिर भगवान ने स्पष्ट कहा कि योग के परिणाम रूप कर्मों से संन्यास पाया हुआ, कर्मों से नहीं बंधता। यानि, जब आपका आत्मा से योग हो तो कर्म आपको नहीं बाँध सकेंगे।

नन्हीं यह सब सुनकर भी अर्जुन को कर्म राज़ समझ में नहीं आया। वह यह न समझ सका कि :

१. वह तन नहीं, आत्मा है।

२. संग का अभाव हो जाने से कर्म निष्प्राण हो जाते हैं।

३. आत्मा से योग के लिये बुद्धि अनिवार्य है। बुद्धि का आत्मा से योग हो जाने से जीव नित्य तनत्व भाव रहित या कहें, देहात्म बुद्धि रहित, नित्य संन्यासी ही होगा।

भगवान साधक को समझाते समझाते उसी के स्तर पर उतरते आ रहे हैं। जब अर्जुन सांख्य को समझकर उसमें टिक न सका, तो भगवान उसे उसी के प्रश्नों के साथ साथ विज्ञान की ओर ले जा रहे हैं और उसी के स्तर पर जाकर उसे ज्ञान समझा रहे हैं। लक्ष्य तो आत्मा है, किन्तु वहाँ टिकने के लिये दिनचर्या तलक पहुँचना ज़रूरी है। अर्जुन, दिनचर्या में संन्यास का राज़ नहीं समझ रहे; या कहें संन्यासी का दिनचर्या में रूप नहीं समझ रहे।

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते।।

श्रीमद्भगवद्गीता ५/ ३

नन्हीं! अब भगवान, संन्यासी की स्थिति बताते हैं और कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. हे अर्जुन! जो पुरुष, न किसी से द्वेष करता है,

२. और न आकांक्षा करता है,

३. वह नित्य संन्यासी ही समझने योग्य है,

४. क्योंकि निर्द्वन्द्व पुरुष सुख से (आसानी से) बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

तत्व विस्तार :

देख नन्हीं! भगवान कहते हैं, जो राग

और द्वेष से रहित है, उसे नित्य संन्यासी ही मानना चाहिये।

प्रथम 'द्वेष' को समझ ले!

द्वेष का अर्थ है,

१. किसी का विरोध करना;
२. किसी से ईर्ष्या करना;
३. किसी से घृणा करना;
४. किसी से मुँह फेर लेना;
५. किसी से शत्रुता करना;
६. किसी से दूर भागने का प्रयत्न करना क्योंकि वह बुरा है।

अब यह समझ ले, कि '**आकांक्षा रहित**' किसे कहते हैं?

१. जो अभिलाषा नहीं करता।
२. जो कामना नहीं करता।
३. जो किसी के लिये लालायित नहीं होता।
४. जो किसी की प्रतीक्षा नहीं करता।
५. जो किसी वस्तु या जीव की इच्छा में आँखें नहीं बिछाता।
६. जो किसी के पास हाथ नहीं फैलाता।
७. जिसमें अर्थ-पूर्ति की चाह का नितान्त अभाव हो।

नन्हीं! अब कांक्षा तथा द्वेष को पुनः समझ ले!

'**वह द्वेष नहीं करता**', यानि,

क) किसी को त्यागना नहीं चाहता;
ख) किसी के प्रति घृणापूर्ण दृष्टि नहीं रखता;
ग) किसी के प्रति शत्रुता का भाव नहीं रखता;
घ) किसी को अपना विरोधी नहीं समझता;
ङ) अपने मन में किसी के लिये वैरभाव नहीं रखता;
च) किसी से निवृत्ति पाने की चाहना नहीं करता;
छ) किसी से भागने के यत्न नहीं करता;
ज) किसी को त्यागने के यत्न नहीं करता।

द्वेष रहित तो अपने शत्रुओं से भी प्रेम करता है। वह विपरीतता से भी नहीं घबराता और अरुचिकर काम भी निरपेक्ष भाव से करता है। वह अत्याचारी से भी भागने के यत्न नहीं करता। कोई उसका मान हर ले या घर हर ले तब भी उससे घृणा नहीं करता।

'**वह कांक्षा नहीं करता**', यानि :

क) वह किसी की चाहना नहीं करता;
ख) जो प्रिय लगे, उसे पाने के यत्न नहीं करता;
ग) अपनी पसन्द के पीछे नहीं जाता;
घ) अपना मान स्थापित करने की उसमें कोई चाहना नहीं होती;
ङ) अपने लिये कुछ भी करने की उसमें कोई चाहना नहीं होती।

यानि अपने लिये उसकी कोई कामना नहीं होती।

संन्यासी की स्थिति :

नन्हीं! संन्यासी तो अपने प्रति मौन होते हैं, वे अपने तन और मन को भूले हुए होते हैं, वे तो अपने आपको भी भूले हुए होते हैं।

१. उन्हें द्वन्द्व क्या सतायेंगे जो अपने प्रति प्रगाढ़ निद्रा में सोये हुए हों?
२. उन्हें सुख दुःख क्या सतायेंगे जो अपने प्रति प्रगाढ़ निद्रा में सोये हुए हों?
३. उन्हें जय या पराजय क्या सतायेंगे जो अपने आप से बेगाने हो गये हों?
४. उन्हें जन्म-मृत्यु क्या सतायेंगे जो तन की परवाह नहीं करते?
५. जो अपने आपको तन ही नहीं मानते, उन्हें राग या द्वेष क्या सतायेंगे?
६. उन्हें मान या अपमान क्या सतायेंगे?

७. उन्हें ज्ञान या अज्ञान क्या सतायेंगे?
८. उन्हें शत्रुता या मैत्री क्या प्रभावित करेंगे?

राग तथा द्वेष रहित को न प्रवृत्ति से न निवृत्ति से; न दुष्ट, न सन्त से; न मान से न अपमान से; न रुचिकर से न अरुचिकर से; न कर्म से न ज्ञान से द्वेष है और न ही राग है।

संन्यासी गण के मन में राग-द्वेष जनित द्वन्द्वों के प्रभाव का नितान्त अभाव होता है। द्वन्द्व रहित, वे मुदित मन वाले लोग नित्य सुखी ही होते हैं।

त्याग, वैराग्य, संन्यास, योग, सब सुख के पथ ही हैं किन्तु जब राग-द्वेष के बन्धन टूटें, केवल तब ही वह नित्य मुक्त होता है।

संन्यास चाहुक की स्थिति अब समझ ले नन्हीं जान!

क) संन्यास एक आन्तरिक स्थिति को कहते हैं।
ख) संन्यास मनोवृत्ति निरोध तथा वृत्ति अभाव का परिणाम है।
ग) संन्यास तो अपने तन से लिया जाता है।
घ) संन्यास आपको आपके तन के प्रति मौन कर देता है।
ङ) संन्यास का स्थूल जीवन के कर्मों से मानो कोई सम्बन्ध नहीं है।
च) संन्यासी के दृष्टिकोण में भेद होता है। उसका अपने प्रति तथा अपने तन के प्रति दृष्टिकोण बदल जाता है।

नन्हीं! जब अपने आपको -

- 'मैं' तन न मानकर आत्मा मान लेता है,

- जब 'मैं' का आत्मा से मिलन हो जाता है,

- जब 'मैं' का आत्मा से योग हो जाता है,

- तब वह तन जो बाक़ी रह जाता है,

- वह संन्यासी का तन हो जाता है।

ज्यों परम गुण तथा दैवी गुण यज्ञशेष होते हैं त्यों आत्मयोग का शेष संन्यास होता है।

नन्हीं! जब जीव आत्मवान बन ही गया, तब उसे तन के कार्यों से क्या? संन्यासी को जीवन की कर्म प्रणाली से क्या प्रयोजन हो सकता है?

संन्यास लेते नहीं, संन्यास धारण नहीं करते, संन्यास हो जाता है।

वास्तविक संन्यासी तथा नित्य संन्यासी कभी संन्यास नहीं लेते। उनका जब आत्मा से योग हो जाता है तब उन्हें दीर्घकाल के पश्चात् लोग संन्यासी कहते हैं।

❖ ❖ ❖

सत् से प्रेम कैसे हो

पिता जी

ऋषिगण कहते हैं कि यदि भगवान को पाना है तो उसके लिये सच्चा प्रेम होना चाहिये। भगवान प्रेम स्वरूप और सत् स्वरूप हैं। भगवान के साथ कैसे मिलन हो?

सारांश

मिलन सजातीय का होता है। गर सच्चा प्रेम हो तो जीव अपने प्रेमास्पद भगवान के गुण अपने में लायेगा ही। जब वह गुण भक्त के आंतर से बहने लगें तो मिलन हो ही जायेगा। प्रेम, करुणा, दया, क्षमा इत्यादि जो भागवत् प्राकट्य के सांकेतिक गुण हैं, वह उस योग स्थित भक्त में निश्चित ही प्रकटेंगे।

प्रश्न अर्पण

ऋषिगण ने है नित्य कहा, भक्ति राह ही भगवान मिले।
साचो प्रेम गर मन में हो, तब ही मिलन यह हो सके।।१।।

प्रेम स्वरूप आनंद स्वरूप, सत्त्व स्वरूप राम जानूँ।
को' विध कैसे प्रेम करूँ, कस मिलन हो कैसे जानूँ।।२।।

तत्व ज्ञान

सत् सों संग ही प्रेम है, सत् गुण में ही श्रद्धा भये।
महामूल्यवान अति प्रिय भये, गुण महिमा ही नित गाये।।३।।

सजातीय का मिलन हो, विजातीय का हो न सके।
वा गुण आप से बहें नहीं, सगुण तव हिय क्या बसे।।४।।

वह क्षमावान करुणापूर्ण, अभय सरल विशुद्ध मनी।
अनुकम्पापूर्ण उदारमनी, शुद्ध निर्मल निष्कपट मनी।।५।।

प्रेम रूप अद्वैत तत्व, तद्रूप सभी के होते हैं।
अनेकों गुण उनके जानों, जो सत् स्वरूप के होते हैं।।६।।

वह गुणातीत निर्गुणिया भी, अखिल गुणी वह आप हैं।
निराश्रित सर्वाश्रय भी, अशरण के शरणा आप हैं।।७।।

अखिल कर्ता वह कर्मातीत, मान्यता रहित वह आप हैं।
खण्डित हों वह अखण्ड रूप, अखण्ड रस वह आप हैं।।८।।

ऐसों से गर मिलना है, तो एकरूपता चाहिये।
सत् को हिय में धर करी, सजातीय वा बन जाइये।।९।।

वा गुण में गर श्रद्धा हो, अपने में वह गुण लाइये।
निर्लिप्त होई संग रहित, करुणापूर्ण बन जाइये।।१०।।

अपने प्रति होई उदासीन, मान अपमान से हो परे।
गुण प्रभावित कर न सकें, क्षमा स्वरूप ही आप भये।।११।।

मनोमन ही वा नाम लिया, प्रेम वहाँ हो ही गया।
अनन्य भाव में ध्याया उसे, जीवन में वह आ उतरा।।१२।।

योग तब हो जायेगा, इक रूप भी हो जायेगा।
निर्मम निर्मोह निर् अहम्, जीवन में हो ही जायेगा।।१३।।

जन्म लेई उस बार बार, प्रतिपादित जो सत्य किया।
वाङ्मय प्रतिमा शास्त्र की, वा मूर्त तू बन जायेगा।।१४।।

गीता आदेश है श्याम का, प्रेमास्पद वह तेरे हैं।
पूर्ण उसकी मान ले, पूज्य गर वह तेरे हैं।।१५।।

ज्ञान-विज्ञान सहित

समझ मना है सत्य राम, है सत्य प्रेम यह जान लो।
सजातीय सत्य के हो जाओ, तब ही तो वहाँ प्रेम हो।।१६।।

जहाँ जात पात ही नहीं मिले, वहाँ मिलन कस हो पाये।
सत्य में सत्य ही हो जाओ, सजातीय तब ही हो पाये।।१७।।

सत् अभ्यास है गुण अभ्यास, राम गुणन् अभ्यास करो।
उदारमनी होई करुणापूर्ण, जग में तुम व्यवहार करो।।१८।।

दूजे की ख़ुशी के लिये जीओ, क्षमा का अभ्यास करो।
शरणापन्न का उद्धार करो, दुखियों को उल्लास दो।।१९।।

द्वेष मन में नहीं उठे, इसपे भी मन ध्यान धरो।
अनुकम्पापूर्ण हिय भये, भागवत् गुण तो यह ही हो।।२०।।

यज्ञ पूर्ण जीवन भये, फल चाह त्यजी सब काज करो।
योग स्वतः हो जायेगा, राम गुण गर तुझमें हो।।२१।।

मान अपमान में निरासक्त, सिद्धि असिद्धि में उदासीन।
वह ही यह सब कर सके, भगवान प्रेम में हो जो लीन।।२२।।

प्रथम सत्य कहो राम को, पूर्ण जो है वह ही हो।
राम गुण अभ्यास फिर, इस जहान में आप करो।।२३।।

राम रूप गर जग सारा, मानो तो वहाँ प्रेम हो।
राम से प्रेम जो पाओ, जहान में जा बहा ही दो।।२४।।

दिनचर्या में सुनो मना, सत्य का आसरा आप ही लो।
परिणाम जो भी तुझे मिले, मुदित मनी हो सीस धरो।।२५।।

कोई जो भी कहे सो कहा करे, विक्षिप्त मन तव नाहिं हो।
किसी क्या कहा क्योंकर कहा, ऐसी बात में नहीं पड़ो।।२६।।

कोई रूठेगा तो क्या हुआ, कोई मान गया तो क्या मिला।
वह राम से प्रीत क्या करे, सुख दुःख में जिस चित्त धरा।।२७।।

राम से प्रेम की बात कहो, तो सत्य ही राह है प्रेम की।
गर सत् से संग हो जाये, मन पथिक भये स्वतः प्रेम की।।२८।।

गर सत् से संग ही नहीं हुआ, हर पल तुझे वह न भाये।
शब्दन् में सत् चाहे भाये, पर दिनचर्या में न भाये।।२९।।

तो वह संग नहीं जानिये, वह तो शब्द की बातें हैं।
वास्तव में वह राम पे, केवल ही बस घातें हैं।।३०।।

मंदिर में बैठ कर झूठो ही, साधक प्यार जो करते हैं।
'तोरो बिन कुछ भाये नहीं,' वादे हज़ार वो करते हैं।।३१।।

जिस पल मंदिर से उठकर, जग में बाहर आते हैं।
जाने सब वादे उस पल, क्यों भूल हम जाते हैं।।३२।।

झूठे वादे झूठा प्रेम, इससे बड़ी है घात क्या।
सच्ची बात करो राम से, वरना आयेगा हाथ क्या।।३३।।

प्रेम बिना कुछ मिले नहीं, ऋषिगण सत् ही कहते हैं।
प्रेम बिना न मिलना हो, सब शास्त्र यही तो कहते हैं।।३४।।

जिससों प्रेम तुम करते हो, वहाँ वफ़ा भी तुम करो।
अपमानजनक जो गुण उसका, स्पष्टता से उसे कहो।।३५।।

माना भड़क वह जायेगा, कलंक तुझी पे लगायेगा।
जग अपमान से तो जानो, प्रेमास्पद बच जायेगा।।३६।।

अपमान से गर तुम डरो, तो तुम कह नहीं पाओगे।
परिणाम में सखा रुष्ट भये, यह तुम सह नहीं पाओगे।।३७।।

या वफ़ा की लाज रहे, या अमर तेरा प्रेम रहे।
या फिर तू तब मौन रहे, झूठ वफ़ा पे नाज़ करे।।३८।।

जीवन में सत् गुण का रूप, इतना सौम्य नहीं होता है।
सौम्य रूप को धर करी, राम मिलन नहीं होता है।।३९।।

स्पष्टवादी तू हो जाये, न्याय भी तब तू कर सके।
गर साचो प्रेम राम से है, तब ही तो तू कर सके।।४०।।

वरना न्याय तू कैसे करे, सच सच बात न कह सके।
अपने को न्यून और अरि श्रेष्ठ, ऐसा हरि ही कह सके।।४१।।

कोई तेरा अपमान करे, फिर भी वा गुण गा सके।
भड़कन का वहाँ कण न हो, उसको अंग लगा सके।।४२।।

कोई तुझको चाहे ठुकराये, बिन माँगे तू क्षमा करे।
जग से तुझे मिटाये कोई, तेरा प्रेम वहाँ न बदल सके।।४३।।

कुछ कुछ आस तो लग जाये, शायद मिलन यह हो जाये।
गर साचो प्रेम है राम से, तब ही यह सब हो पाये।।४४।।

गर साचो प्रेम वहाँ नहीं, तो मिथ्याचारी तुम उसे कहो।
सत्मय गर व्यवहार नहीं, तो दुराचारी तुम उसे कहो।।४५।।

सो राम प्रेम की बात कहो, तो सत्य रमण अब से करो।
सत्य रमण में संग जो हो, प्रेम स्वरूप तब बन सको।।४६।।

फल चाहना है वहाँ नहीं, उसको कुछ भी पाना नहीं।
सत्य से प्रेम जो हो गया, सत् बिन कोई ठिकाना नहीं।।४७।।

प्रेम के आसरे वा जीवन, राममय हो जायेगा।
वा गुण आंतर से बह ही गया, सजातीय तू हो जायेगा।।४८।।

बहुशाखा बुद्धि उनकी हैं, अनेकों जिनकी चाहें हैं।
आसक्तमनी विषयसंगी, वह प्रेम तो कर नहीं पाये हैं।।४९।।

सत् चाहुक सत् प्रेमी की, बुद्धि एक ही होये है।
सत् प्रेमी का जान मना, मन बुद्धि में खोये है।।५०।।

इन्द्रियाँ मन में लय होयें, फिर मन बुद्धि में लय होये।
शनैः शनैः वह बुद्धि जा, परम सत् में लय होये।।५१।।

प्रेम स्वरूप की बात सुनो, अपने को वह भूल गया।
प्रेमास्पद में वह क्या खोये, निज प्रति उदासीन भया।।५२।।

अपने प्रति वह मौन है, हर प्रहार सहे मौन में।
वहाँ वाक् भी है स्पंदन भी है, पर वह बैठा है मौन में।।५३।।

सत् सों जब हो तीव्र लग्न, तब ही प्रेम यह होता है।
मन बुद्धि मिली सत् चाहें, प्रेम जन्म तब ही होता है।।५४।।

समझ मना वा प्रेम समझ, इस विधि समझ न आयेगा।
गर संग सत्य सों हो जाये, पल में समझ आ जायेगा।।५५।।

प्रेम सत्य की चेरी है, सत्य का यह परिणाम कहो।
सत्य की देन इसे जानो, सत्य का यह वरदान कहो।।५६।।

प्रेम स्वरूप जीवन में, सौम्य स्वरूप नहीं होते।
कर्मन् में भी जान मना, वह एकरूप नहीं होते।।५७।।

कभी मौन का रूप धरें, कभी अरुचिकर बात कहें।
कभी विकराल वह रूप धरें, कभी झुके से दर्शायें।।५८।।

वा ठुकराव भी प्रेम ही है, वा मनाव भी प्रेम ही है।
वा झुकाव भी प्रेम ही है, वा अकड़ाव भी प्रेम ही है।।५९।।

दिनचर्या में मन प्रेम रूप, हर ही रूप में होता है।
प्रमाण प्रेम का इतना है, वह तो केवल 'होता' है।।६०।।

अपने लिये कुछ करे नहीं, अपने को तो वह भूल गया।
प्रेमास्पद में खो वह गया, या वा चरणन् की धूल भया।।६१।।

प्रेमास्पद को रिझाने को, वह सबसे प्यार ही करता है।
प्रेमास्पद ही तुम कह लो, उस राही प्रेम ही करता है।।६२।।

करुणा दया वा सज्जनता, उदारता जो भी बह निकले।
वह तो कुछ भी नहीं करें, वहाँ राम प्रेम ही बह निकले।।६३।।

अपना नाम वहाँ भूल गया, प्रेमास्पद का वहाँ नाम रहा।
जग ठुकराये या अपनाये, उसको कब कुछ याद रहा।।६४।।

गर साचो लग्न तेरी हो जाये, तो सहज मिलन हो जायेगा।
फिर साधना की भी बात मिटे, निश्चित मिलन हो जायेगा।।६५।।

१४.१.१९६७

भक्ति की पुकार -
'इक बूँद के प्यासे हैं हम!'

श्रीमती पम्मी महता

हे श्री हरि माँ, जब जीवन में ज्ञान बोझ बनने लगता है, तब आप ही तो हैं जो प्रेम के द्वार खोल देते हैं... और साथ ही जीवन राही यह भी बता देते हैं,
'सबसे ऊँची प्रेम सगाई!'
- मुहब्बत ही इबादत है...

... यही सच्चा सौदा है,

... यही इबादत है,

... यही श्रद्धा भक्ति है,

... यही अनन्यता है,

...यही अपने आप में सम्पूर्ण है, तभी तो आप मुहब्बत हैं!

मुहब्बत ही जीव को आपका वरदान है! अतीव विशिष्ट वरदान है... व हमारा परम सौभाग्य है जो हमें इस प्यारी मिलन की राह पर आप लिवा लाये हैं... जहाँ आंतर की सारी मलिनता इसी आपकी प्रीत में जा विलीन हो जाती है। कैसी अद्‌भुत रचना करी है आप रचनाकार ने!

ज्ञान जब तक विज्ञान में परिणत नहीं हो जाता, मुहब्बत एक रहस्य ही बनी रहती है। मुझ जैसी नमानी, प्रीत की रीत कहाँ जानती है! सच तो यह है, आप ही ने प्रीत निभाई है व यही परम सत्य आप ही ने निभा कर बताया है कि आपका हर रंग, प्रेम का

रंग है। इसी से आप प्रभु माँ सदा सराबोर रहते हैं। इसी एक रंग की अपरम्पार महिमा का पार पाना कितना कठिन है... कितना दुष्कर है... पर अद्वितीय है!

आप माँ प्रेम का सागर हैं। इसी की एक बूँद के प्यासे हैं हम! यह स्वाति बूँद है। आप श्री हरि माँ की कृपा बिन कहाँ मिल पाती है यह स्वाति बूँद! जीव को पाना तो दूर, इसके दर्शन भी नहीं हो पाते और न ही प्रेम सगाई का तेज व प्रेम, जिसमें 'मैं' की सभी भाव-भावनायें जा समाहित हो जाती हैं। आप कैसे इन हमारे संतप्त हृदयों को शीतलता प्रदान करती हैं कि दुःख की वेदना से निजात मिल जाती है। आप श्री हरि माँ ही तो हैं जो हमें हमारी वेदनाओं, हमारी पीड़ाओं से मुक्ति दिलाती हैं व हमें शीतलता प्रदान करती हैं। जन्म-जन्मांतर व युग-युगातंर से आपसे बिछुड़ कर क्या पाया हमने... यह तड़प, यह वेदना पीछा ही नहीं छोड़ती!

शुक्र है आप मालिक ने, आप जगतपति ने, हमारे लिये इस जगती पर अवतरित हो कर हमारे कल्याण का पथ खोल दिया। आप ही ने बताया, जीवन कैसे भरपूर जिया जा सकता है। जहाँ अपनी याद ही नहीं आती... केवल आप ही आप चहूँ ओर नज़री आते हैं! आंतर-विभोर हुई हृदय-पटल पर आप ही आपको निहारती हुई धन्य-धन्य महसूस करती हूँ।

बारम्बार, लाख बार आपका धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने आ मुझे अपने में जगा लिया। तभी तो पता चला, 'हम कैसे तुम कैसे प्रभु जी!' ईश्वर करे इस जीवन में 'मैं' में अब कभी लौटना न हो। आत्मा का परमात्मा से सदा-सदा के लिए मिलन हो जाये। माटीवत् जीने का परम सौभाग्य पा जाऊँ। धन्य-धन्य हुई आप ही आप श्री हरि परम पूज्य माँ का कोटि-कोटि धन्यवाद करती हुई इन्हीं श्री हरि चरणन् में मिट जाऊँ!

हे श्री हरि परम पूज्य माँ, आप ही ने इसे कृतार्थ किया है! अपने अलौकिक जीवन दर्शन दे कर इसे आपने धन्य धन्य किया है। आपने ही अपनी दैवी सम्पदा के इसमें गुल खिला कर इसे गुलशन-गुलशन कर दिया है। धन्य हैं आप व आपका धैर्य, जिसे आपने कभी नहीं खोया! आप माँ का जितना धन्यवाद करूँ कम है!

आप ही ने इसकी हृदय-वीणा पर अपने ही सुर साधे हैं! इसकी आरोही-अवरोही में आप ही का सामगान भरा है, फिर भी आपकी प्रेम-गंगा को इस हृदय से बहते नहीं देखा। इस मन को आपने कब मन-मन्दिर बना डाला और स्वयं को स्थापित भी कर लिया। आपके अनथक क़दम चलते ही चले गये, फिर भी यह आपकी अभी तलक नहीं हुई... कब ले जायेंगे इसे अपने धाम, हे श्री हरि परम वन्दनीय माँ?

चलिए हे श्री हरि माँ, योग-साधना के हर क़दम में इस कनीज़ अपनी को जो भी आप दें, उसे तहेदिल से उठाती चली चलूँ! कभी तो यह मन, अमन हो जायेगा व आप अपने धाम इसे लिवा ले जायेंगे। हे श्री हरि, आप जो इसके मन में हैं, उन्हीं श्री विग्रह के श्री चरणन् में रखे रहें!

आप माँ के क़दम जिधर से भी चलें, वही महामंत्र है जीवन का... जो आप हमारी मनो-धराओं पर लिखते जाते हैं। तभी तो युगों का सत्य आज भी उतना ही परम सत्य है, जितना तब था। यह आज भी परम सनातन है! अद्‌भुत, अतीव अद्‌भुत!

आपकी इस परम सनातन धरोहर को असीम अदब व प्यार से व श्रद्धा भक्ति भाव से नमन देती हूँ और आप योगेश्वर की पूजा अर्चना करी आप ही की आरती उतारती हूँ और दुआ करती हूँ, 'गर सच्चे मन से कणमात्र भी आपसे प्यार किया है तो मेरा जीवन आप ही की अमानत हुआ रहे।'

'आप ही की बंदगी में सदैव आपके प्रति अर्पित व समर्पित हुआ रहे यह मन! आप ही की बंदगी में, आपके अद्वितीय जीवन की अपरम्पार महिमा में मेरा मन, वचन, काया से आप ही आपका नाम निःसृत हो! आप ही आपका प्रवाह इस हृदय से प्रवाहित हो, जो आपसे पाई दिव्य देन के अनुरूप ही इसका जीवन ढल जाये। यूँ ही धन्य-धन्य हुई आप ही में मिट कर, आप ही को परवान हो जायें!' आमीन।

आप माँ से सभी पाकर आस तो बंध ही जाती है कि आदि, मध्य और अंत सभी आप हैं। फिर जब करण-कारण भी आप हैं, तो आस तो बंध ही जाती है। इस विचित्र जगत के कर्णधार स्वयं आप, जीवन रूपी नाव के नाविक भी आप और खवैया भी आप... और यह जीव जगत आप ही का संकल्प हो तो हे सर्वनियता, आप ही बताइये इसकी बिसात ही क्या है सिवाय इसके कि जीवन निमित्त मात्र है आपकी ओर जाने के लिए!!

यह तन साधन मात्र ही तो है आत्मा का परमात्मा से मिलन का... जब सम्पूर्ण जीवन आप ही की कृपा से, आप ही पर केन्द्रित हो जाता है तब आप ही सही दिशा देकर हम जैसे गुमराह जीवों को राह दिखाने आते हैं। मनोधरा पर जब आप के अनुभवों के बीज पड़ते हैं तो आप ही उन्हें सींच कर, उन्हें protect करते हैं। आप में सुरक्षित हो कर ही मन, वचन, काया का समन्वय हो जाता है। तभी आप अप्रकट, प्रकट हो कर इस जीवन पे अपने प्यार, करुणा व दया तथा क्षमा व अपनी अनुकम्पा की सावन-भादों की झड़ियाँ लगा देते हैं और यह मानवी जीवन धन्य-धन्य हो जाता है... प्रभुमय हो जाता है!

आपने तो प्रथम मिलन में ही क्षमा कर दिया था। कैसी आपकी आग़ोश... कैसा समेटा कि फिर आपकी मेहर आपकी करुण-कृपा से कभी अलग हो ही नहीं पाई। शुक्र है लाख-लाख बार, पर आप का शुक्रान करके भी कर नहीं पाई।

बस इल्तिजाओं, याचनाओं व मंगल कामनाओं के साथ साथ गुज़ारिश है, 'आपकी ही होकर, आप ही से पकड़ी-पकड़ी, आप ही से लिवा ले जाऊँ आपके धाम में!' हरि ओऽम् तत्सत। ❖

परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
जून २०१७

अर्पणा समाचार

जीवन के ज्ञान का भविष्य के लिए संरक्षण

परम पूज्य माँ द्वारा दिया गया जीवन का बहुमूल्य ज्ञान कई वर्षों से अनेकों वीडियो में सुरक्षित है। पिछले ४ वर्षों से उनको नवीनतम तकनीकों द्वारा डिजिटल मीडिया पर डाला जा रहा है। आज अर्पणा मधुबन, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली और वैबसाइट पर परम पूज्य माँ के सुन्दर गायन और शब्दों को, जिसे पूज्य माँ ने 'उर्वशी' नाम दिया, अधिक सुस्पष्ट रूप में देखा जा रहा है।

हम यूएसए के टॉम और बारबरा सार्जेंट के प्रति अति आभारी हैं जिन्होंने हमें इस कठिन और विशाल कार्य के लिए सहायता दी। एवं हम अर्पणा के उन सदस्यों के भी आभारी हैं जिन्होंने इसे कार्यान्वित किया।

साधना दिवस, महासमाधि दिवस और छोटे माँ की स्मृतियाँ

९ मार्च को परम पूज्य माँ की साधना प्रारम्भ हुई। हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी यह दिन 'साधना दिवस' के रूप में मनाया गया। तत्पश्चात १६ अप्रैल को परम पूज्य माँ के 'महासमाधि दिवस' के अवसर पर और १० मई को पूज्य छोटे माँ की पुण्य तिथि के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। अर्पणा परिवार ने इन महान आत्माओं को कृतज्ञता सुमन अर्पित करते हुए उनके द्वारा सिखाये गये मूल्यों को अपने जीवन में लाने का संकल्प लिया।

मानव प्रयास में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार

अर्पणा को मानव प्रयास में उत्कृष्टता के लिए भगवान महावीर फाउंडेशन द्वारा सामुदायिक एवं सामाजिक सेवा के क्षेत्र में २०वें महावीर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार में नकद राशि, स्मृति-चिन्ह और प्रशंसापत्र शामिल हैं।

ग्रामीण विकास दल की प्रमुख श्रीमती अरुणा दयाल ने कहा, 'यह उपलब्धि परम पूज्य माँ से विरासत रूप में मिले प्रेम और सेवा का प्रसाद है। वंचित और पिछड़े समुदायों के बेहतर और सम्मानपूर्ण जीवन के लिए अवसर पैदा करने की प्रेरणा हमें परम पूज्य माँ से ही मिली।

परम पूज्य माँ के श्री चरणों में हमारा नमन!'

हिमाचल में अर्पणा

राज्य में सर्वश्रेष्ठ महिला स्वयं सहायता समूह - 'आरती महिला बचत समूह'

११ फरवरी २०१७ में, गाँव छत्तार के अर्पणा के समूह को गत वर्ष के लिए 'नाबार्ड' द्वारा हिमाचल में सबसे उत्तम स्वयं सहायता समूह के रूप में पुरस्कार प्रदान करके मान्यता दी गई।

इन महिलाओं ने उद्यम की अनुकरणीय भावना का प्रदर्शन किया। उनके समूह ने एक दशक में २० लाख रुपये का ऋण लिया और पूरे ऋण का सही समय पर भुगतान भी कर दिया। इन्होंने घरेलू डेयरी के निर्माण में निवेश किया और अब लगभग २ क्विंटल दूध की आपूर्ति मंगला और चम्बा के ग्राहकों को प्रतिदिन की जाती है।

राज्य में दूसरा सर्वश्रेष्ठ किसान क्लब - काकेला गाँव का 'ज्योति किसान क्लब'

अर्पणा के सतत प्रयास एवं सहयोग से इन किसानों ने सब्जी की फ़सलें उगाना आरम्भ कर दिया है और उन्होंने अपने उत्पाद का सामूहिक विपणन भी आरम्भ किया है। इससे उनकी आय बढ़ कर १,५०,०००/- रुपये तक प्रति किसान प्रति वर्ष हो गई है जो कि पूर्व वर्षों में कुल १०,०००/- रुपये प्रति वर्ष थी। 'नाबार्ड' ने उनकी इस सफलता को उन्हें दूसरे सर्वश्रेष्ठ किसान क्लब के रूप में मान्यता देकर पुरस्कृत किया है।

अर्पणा गजनोई केन्द्र के निर्देशक, श्री पी सी कपूर, 'ज्योति किसान क्लब' को पुरस्कार प्रदान करते हुए

अर्पणा, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में अपने शैक्षिक कार्यक्रमों के समर्थन के लिए IDRF, टॉम सार्जेंट एवं टाइड्ज़ फाउंडेशन, USA का हार्दिक आभारी है।

स्मृति में

डॉ. जे चक्रवर्ती ने मई २०१७ में लम्बी बीमारी के अंतराल के बाद अपने पार्थिव शरीर का त्याग कर दिया।

परम पूज्य माँ द्वारा लगाया गया सेवा का बीज डॉ. चक्रवर्ती के लिए समर्पण की प्रेरणा का स्रोत बना।

हिमाचल प्रदेश में उनके द्वारा १९९३ से २०१२ तक की गईं अर्पणा स्वास्थ्य सेवाओं के लिए अर्पणा सदैव उनका आभारी रहेगा।

उन्होंने दैनिक निःशुल्क ओपीडी (OPD) क्लिनिक और दूरस्थ गाँवों में १९९६ से २००५ तक मैडिकल एवं शल्य चिकित्सा शिविरों का आयोजन करके, पहाड़ के लोगों के साथ-साथ वहाँ के अधिकारियों का भी दिल जीत लिया।

समर्पण भाव से उनके द्वारा किये गये काम की इतनी प्रशंसा की गई कि अर्पणा को दो बार (२००० एवं २००१) में 'हिमोत्कर्ष नैशनल इंटेग्रेशन अॅवॉर्ड' से सम्मानित किया गया।

दिल्ली के कार्यक्रम

अर्पणा के वसंत विहार में शैक्षिक कार्यक्रम - 'अरे! इनमें तो प्रतिभा है!'

२८ अप्रैल को, सर्वोदय स्कूल के कक्षा १ एवं २ के लगभग १६० वंचित बच्चों ने उत्साहपूर्वक अपने पंसदीदा गीतों और कहानियों को नाट्यरूप में प्रस्तुत किया, जिससे उनके माता-पिता एवं शिक्षक अति प्रसन्न हुए। वसंत विहार में स्थित सरकारी स्कूल में, नियमित स्कूल कक्षाओं के बाद, अर्पणा द्वारा इनके ट्यूशन के कार्यक्रम चलाये जाते हैं, जबकि प्रशासन एवं अन्य कक्षायें समीपस्थ अर्पणा के 'समुदाय कल्याण केन्द्र' में आयोजित की जाती हैं।

सुमधुर स्वरों से प्रेम और भक्ति का वातावरण बना

१९ अप्रैल को, नई दिल्ली के वसंत विहार में, अर्पणा के सामुदायिक केन्द्र,'रिजॉयस' में, श्रीमती आस्था गोस्वामी ने पदावली गायन की अनूठी शैली द्वारा भक्तिमय एवं हृदयस्पर्शी गायन प्रस्तुत किया।

एकत्रित सभी गणों ने अपने परिवार और मित्रों के साथ एकजुटता और प्यार के इन विशेष क्षणों का आनन्द उठाया।

मोलरबन्द में अर्पणा के छात्रों को रिटेल सैक्टर की कम्पनी का आमंत्रण!

१५ अप्रैल को अर्पणा के मोलरबन्द केन्द्र में, 'Westside', लाजपत नगर से ५ सदस्यों की एक टीम आई। स्टोर के प्रबन्धक, मानव संसाधन अधिकारी एवं अर्पणा के ३ पूर्व छात्रों ने ख़ुदरा क्षेत्र के बढ़ते विस्तार और गुंजाइश के विषय में बताया। प्रियंका को पहले से ही एक अधिकारी के रूप में पदोन्नत किया गया है। छात्रों ने उत्सुकता से उन्हें सुना व प्रेरणा पाई।

हरियाणा ग्रामीण सशक्तिकरण

'सूचना, अनुपालन, रूपांतरण!' प्रधानमंत्री द्वारा दिया गया वाक्यांश अर्पणा के 'ग्रामीण महिला समूहों' के लिए बिलकुल उपयुक्त है! **'सूचना'** से 'विमुद्रीकरण' के विषय में जानकारी प्राप्त करके कैशलैस लेन-देन के तौर-तरीक़े सीखते हुए अर्पणा के स्वयं सहायता समूहों में ७०% आपसी लेन-देन NEFT अथवा चैक द्वारा करके इसका **'अनुपालन'** किया। बैंकिंग के विषय में सीखने से महिलाओं की कार्यशैली का **'रूपांतरण'** हुआ।

अर्पणा के महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम को एक पुरस्कार के द्वारा मान्यता प्राप्त हुई, जिसे श्रीमती किरण चोपड़ा, श्री अश्विनी चोपड़ा (MP) की धर्मपत्नी, द्वारा 'जय भारत युवा मंडल' एवं 'वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब' के तत्वावधान में 'महिला सशक्तिकरण दिवस' को इन्द्री ब्लॉक, करनाल ज़िला में दिया गया।

अर्पणा अस्पताल

पापा जी की याद में

हमारे प्रिय डॉ. जे के महता, सभी के पापा जी, एक आदर्श चिकित्सक का उत्कृष्ट प्रमाण थे। उनकी करुणा एवं सौहार्दपूर्वक व्यवहार से रोगियों के समूह उनकी ओर स्वतः ही खिंचे चले आते थे और उनकी दक्षता से जल्द ही स्वस्थ लाभ प्राप्त करते थे।

उनकी स्मृति में आई सी यू का उद्घाटन

इस वर्ष, ९ मार्च को साधना दिवस मनाने के लिए सब ने महसूस किया कि उनके द्वारा शुरु किये गये काम को सुदृढ़ एवं सुचारू ढंग से चलाये रखना ही उनके प्रति सबसे सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आधुनिक यंत्रों व उपकरणों वाले १२ बिस्तरों के आई सी यू और एच डी यू का उद्घाटन अर्पणा अस्पताल में किया गया और उनकी स्मृति को समर्पित किया गया। डॉ. महता अर्पणा अस्पताल के सबसे प्रथम चिकित्सक थे और ग्रामीण चिकित्सा सेवाओं के संस्थापक भी थे।

डॉ. जे के महता के सम्मान में बुढ्ढाखेड़ा डिस्पैंसरी में मेमोरियल कैंप

बुढ्ढाखेड़ा औषधालय, जो सरदार तेजा सिंह ने पापा जी को प्रशंसा रूप में भेंट में दी थी, में एक मैडिकल और नेत्र शिविर का आयोजन किया गया। उनके परिवार ने भी इसमें भाग लिया। शिविर में २८० रोगी आये, जहाँ डॉ. इला आनन्द, FRCOG ने डॉ. महता की पुण्य स्मृति में व्यक्तिगत रूप से स्त्री एवं प्रसुति रोगियों की जाँच की। नेत्र रोगियों की भी मोतियाबिन्द के लिए जाँच की गई।

We, at Arpana, depend on your support for our programs

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India

FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contributions for dissemination of humane values & medical and community welfare services in **Delhi** to:
Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037
Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:

Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037
Send contributions in USA to:
Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249

Mr. Vinod Prakash, President, India Relief & Development Fund, 5821 Mossrock Dr., N. Bethesda, MD 20852
Send contributions to Arpana Canada,
c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada
Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana
Information & Resources Office: 91-184-2390905, Executive Director: 91 9818600644

Email: at@arpana.org &arct@arpana.org
Contact Person: Mrs. Aruna Dayal, Director Development, Mobile 91 9991687310

www.arpanaservices.org **www.arpana.org**

Arpana Ashram

Research

Publications & CDs

Arpana endeavours to share its treasure of inspiration – the life, words and precept of *Pujya Ma*, through the publication of books and cassettes.

Publications

गीता	Rs.300
कठोपनिषद् हिन्दी	Rs.120
श्वेताश्वतरोपनिषद्	Rs.400
केनोपनिषद्	Rs.36
माण्डूक्योपनिषद्	Rs.25
ईशावास्योपनिषद्	Rs.20
प्रश्नोपनिषद्	Rs.50
गंगा	Rs.40
प्रज्ञा प्रतिभा	Rs.30
ज्ञान विज्ञान विवेक	Rs.60
मृत्यु से अमृत की ओर	Rs.36
जपु जी साहिब	Rs.70
भजनावली	Rs.80
वैदिक विवाह	Rs.24
गायत्री महामन्त्र	Rs.20
नाम	Rs.15
अमृत कण	Rs.12
Lets Play the Game of Love	Rs. 400
Bhagavad Gita	Rs.450
Kathopanishad	Rs.120
Ish Upanishad	Rs.70
Prayer	Rs.25
Love	Rs.20
Words of the Spirit	Rs.12
Notes	Rs.10

Bhajan CDs

ईशावास्योपनिषद् (a deluxe 8 CD set)	Rs.2000
स्वरांजलि - भाग १ और २	Rs.175each
नमो नमा	Rs.175
उर्वशी भजन	Rs.175
हे राम तुझे मैं कहती हूँ - भाग १	Rs.75
गंगा (भाग १ और २)	Rs.75each
राम आवाहन	Rs.75
तुमसे प्रीत लगी हे श्याम	Rs.75
हे श्याम तूने बंसी बजा	Rs.75

For ordering of books, please address M.O./DD to: **Arpana Publications** (payable at Karnal). Kindly add Rs. 25 to books priced below Rs. 100 & Rs. 40 to books above Rs. 100 as postal charges

Arpana Pushpanjali

Hindi/English Quarterly Magazine

Subscription	**Annual**	**3yrs.**	**5yrs.**
India	130	375	600
Abroad	350	1000	1650

Advertisement	**Single**	**Four**
Special Insertion (Art Paper)	10,000	
Colour Page	3500	12,000
Full Page (b&w)	2000	6000
Half Page (b&w)	1200	4000

(Amounts are in Rupees)

Subscription drafts to be addressed to: **Arpana Trust (Pushpanjali & Publications)**

Delhi Contact Person:
Mr. Inderjeet Anand
E - 22 Defence Colony,
New Delhi 110024
Tel: 41553073

Donation cheques to be addressed to: Arpana Trust (payable at Delhi)

Arpana Trust *- Donations for Spiritual Guidance Activities, Publications, Scholarships and Delhi Slum Project. Regd. under FCRA (Regd, number 172310001) to receive overseas donations.*

Applied Research

Medical Services

In Haryana
- 130 bedded rural Hospital
- Maternity & Child Care
- Family Planning
- Eye Screening Camps
- Specialist Clinics
- Continuing Medical Education

In Himachal
- Medical & Diagnostic Centre
- Integrated Medical & Socio-Economic Centre

In Delhi Slums
- Health care to 50,000
- Immunisations
- Antenatal Care
- Ambulance

Women's Empowerment

Capacity Building
- Entrepreneurial activities
- Local Governance
- Micro-Planning
- Legal literacy

Self Help Groups
- Savings
- Micro credit
- Federation
- Community Health
- Exposure Visits

Gender Sensitization

Income Generation through Handicraft Training Skills

Child Enhancement

Education
- Children's Education
- Vocational Education
- Cultural Opportunities
- Day Care Centres
- Pre-school Care & Education

Health
- Nutrition Programme
- School Health Programme

In Delhi Slums
- Environment, Building Parks & Planting trees
- Housing Project
- Waste Management

Arpana Research and Charities Trust *Exempt U/S 80 G (50% deduction) on donations for the hospital & Rural Health Programmes. Regd. under FCRA (Regd. number 172310002) to receive overseas donations.*

Contact for Questions, Suggestions and Donations:

Mr. Harishwar Dayal, Executive Director, Arpana Group of Trusts, Madhuban, Karnal - 132037, Haryana.
Tel: (0184) 2380801- 802, 2380980 Fax: 2380810 Email: at@arpana.org / Web site: www.arpana.org

All donation cheques/ DD to be addressed to : ARPANA TRUST (payable at Karnal)